jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:45 PM Page 14

उन्हें भाऊ जुगादे के साथ आगरा शहर में संघ कार्य के लिए भेज दिया। आयु के 24वें वर्ष में कालेज की पढ़ाई को बीच में छोड़कर नानाजी आगरा पहुंच गए। आप्टे जी के निर्देशानुसार 3 जुलाई को डॉक्टर जी के श्राद्ध-दिवस पर आगरा में संघ शाखा शुरू हुई। इसी समय पं. दीनदयाल उपाध्याय कानपुर से बी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करके अंग्रेजी में एम.ए. की पढ़ाई करने आगरा पहुंच गए। वे कानपुर में संघ के अच्छे कार्यकर्ता बन चुके थे। अतः आगरा में ये तीनों कार्यकर्ता एक ही कमरे में रहने लगे। उस अल्प सहवास में नानाजी के मन में दीनदयाल जी की संघनिष्ठा, बौद्धिक क्षमता, आदर्शवादी प्रकृति और सहज-सरल स्वभाव के प्रति जो आत्मीयता व श्रद्धाभाव पैदा हुआ, वह जीवन के अंत तक बना रहा।

उन दिनों संघ के पास पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की संख्या बहुत थोड़ी थी और संघ-कार्य से अछूता क्षेत्र बहुत बड़ा। अतः आगरा में तीन-तीन श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं का जमघट अनावश्यक लगा। नानाजी को आगरा से भाऊराव देवरस के पास कानपुर भेज दिया गया। भाऊराव ने उन्हें पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर नगर में संघ-कार्य आरंभ करने के लिए भेजा। नानाजी ने बताया कि वे 15 अगस्त 1940 को केवल 14 रूपए जेब में लेकर गोरखपुर के लिए रवाना हो गए। गोरखपुर नानाजी के लिए चुनौती बनकर आया। नया स्थान, कोई परिचय नहीं, ठहरने-खाने का ठिकाना नहीं। कुछ दिन धर्मशाला में काटे। उसे बार-बार बदलना पड़ता, क्योंकि एक साथ तीन दिन से अधिक ठहरने की अनुमति नहीं थी। किसी ने घनश्याम नारायण प्रसाद सिंह नामक एडवोकेट से परिचय कराया। वे जमींदार परिवार के थे, उनके पास बड़ी कोठी थी, अकेले प्राणी। खाना बनाने वाला कोई नहीं। नानाजी उनके लिए दोनों समय भोजन बनाने लगे और वहीं रहने लगे। कुछ समय बाद देवी प्रसाद अग्रवाल ने उनके रहने-खाने की व्यवस्था अपने घर में की। बहुत प्रयास करने पर भी शाखा नहीं लग पा रही थी। उनकी आँखें खोजने लगी, कहां से कैसे तरुणों को जुटाया जाए। नानाजी की खोजी बुद्धि सक्रिय हो गई। डी.वी. इण्टर कालेज के बंगाली डे मास्टर फुटबाल की टीम बनाने की कोशिश कर रहे थे। नानाजी बाहर खड़े हांकर उनकी टीम को खेलते देखते। फुटबाल में वे निष्णात थे। नानाजी ने डे मास्टर से खेलने की अनुमति मांगी, बहुत अनुनय-विनय पर अनुमति मिल गई। लेफ्ट खेलने को कहा, नानाजी से गोल लग गया। उन्हें टीम में ले लिया गया। उसी टीम को नानाजी ने संघ की शाखा बना दिया। उसमें के सात खिलाड़ियों को साथ ले वे 1941 के संघ शिक्षा-वर्ग में नागपुर गए। संघ-कार्य बढ़ाने के लिए उन्होंने नए-नए उपाए अपनाए। अपनी व्यवहार कुशलता से एक ओर उन्होंने महंत दिग्विजय नाथ, गीता प्रेस के संस्थापक भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार, कांग्रेसी नेता बाबा राघवदास जैसे प्रतिष्ठित और बड़े लोगों से सम्पर्क बनाया। वार एसोशियेशन के चेयरमैन हरिहर प्रसाद दुबे को संघचालक बनाया। प्रसिद्ध होमियोपेथ डॉक्टर हृषिकेश बनर्जी को जिला कार्यवाह का दायित्व दिया। शूगर मिल के मैनेजर ठाकुरदास साहनी को जोड़ा। युवकों में राष्ट्रप्रेम और वीर भाव का संचार करने के लिए अभिनव ढंग के विशाल कार्यक्रमों की रचना की।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के समय संघ के एकत्रीकरण को भंग करने के लिए अंग्रेज एस.पी. मि. टामस पिस्तौल हिलाता हुआ पुलिस टुकड़ी के साथ 'डिस्पर्स, डिस्पर्स' चिल्लाता हुआ आ धमका। नानाजी ने स्थिति की नाजुकता को भांपा, दौड़ते हुए टामस के पास पहुंचे, उसके कान में कुछ कहा। सम्पत कराया, प्रार्थना और ध्वज प्रणाम करके विकिर कर दिया। टामस को अपना पौरूष दिखाने का अवसर नहीं दिया। देवरिया जिले के गौरी बाजार के पास टप्पी गांव में एक विशाल शीत-शिविर लगाया। स्वयंसेवकों के द्वारा 500 रावटी या पटकुटियाँ तैयार कराई, शंख व्यूह रचना के बाद सूर्यास्त के समय एक विशाल युद्ध का दृश्य खड़ा किया। इस युद्ध में 17 हाथियों और

अपने प्रेरणा स्रोत पं. दीनदयाल उपाध्याय के साथ